

मुख्यमंत्री ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी की उपस्थिति में उनकी आत्मकथा भारतीय गणतन्त्र की विजय गाथा 'मेरा जीवन, मेरा संघर्ष' का विमोचन किया

साधारण शिक्षक का पुत्र देश का प्रधानमंत्री, साधारण पृष्ठभूमि से आने वाला व्यक्ति मुख्यमंत्री तथा समाज के कमजोर वर्ग से आने वाला व्यक्ति देश का राष्ट्रपति बन सकता, यही भारतीय गणतन्त्र की सच्ची विजय गाथा : पूर्व राष्ट्रपति

मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में उ०प्र० में विकास कार्यों, कानून-व्यवस्था और सुशासन को नई ऊर्जा मिली

मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया, एक्सप्रेस-वे, एयरपोर्ट और मेट्रो सेवाओं जैसी परियोजनाओं से आवागमन सुगम हुआ

सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से अन्त्योदय की भावना के अनुरूप विकास का लाभ ग्रामीण परिवारों और समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुंच रहा

उ०प्र० श्री रामनाथ कोविन्द की जन्मभूमि और कर्मसाधना की भूमि, उनका प्रदेश आगमन प्रत्येक प्रदेशवासी को अभिभूत करने वाला : मुख्यमंत्री

श्री कोविन्द की जीवन यात्रा बताती कि व्यक्ति में संघर्ष करने का जज्बा विषम परिस्थितियों से जूझने की प्रवृत्ति तथा लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प हो, तो वह असाधारण उपलब्धियां प्राप्त कर सकता

अच्छी पुस्तकें किसी भी व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बन सकती सोशल मीडिया पर रील बनाकर लाइक्स प्राप्त करने के बजाय अपनी वास्तविक जिंदगी को बेहतर बनाने पर ध्यान देना युवाओं के लिए अधिक उपयोगी

प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से प्रदेश में ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालयों की स्थापना की जा रही, 57,600 ग्राम पंचायतों में निर्मित ग्राम सचिवालय में एक कक्ष पुस्तकालय के लिए निर्धारित

लखनऊ : 14 अक्टूबर, 2026

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने आज यहां लोक भवन में भारत के पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द जी की उपस्थिति में उनकी आत्मकथा भारतीय गणतन्त्र की विजय गाथा 'मेरा जीवन, मेरा संघर्ष' का विमोचन किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द ने कहा कि अपनी आत्मकथा के हिन्दी संस्करण के विमोचन समारोह में उपस्थित होना उनके लिए भावपूर्ण क्षण है, क्योंकि इस पुस्तक में उनके निजी जीवन, संघर्षों और अनुभवों का उल्लेख है। उनका जीवन कानपुर देहात जिले के छोटे से गांव परौख से प्रारम्भ हुआ।

गांव से उन्हें आपसी संवेदना, भाईचारे और सामुदायिक भावना की अनमोल पूंजी मिली। वहां लोगों को पारिवारिक रिश्तों के माध्यम से सम्बोधित करने की परम्परा थी। चाचा-चाची, भैया-दीदी, दादा-दादी, अम्मा-बापू और ताऊ जैसे सम्बोधनों के पीछे बड़ों के प्रति सम्मान, प्रेम और स्नेह के संस्कार निहित थे। उनके जीवन का अभिन्न हिस्सा बने यह संस्कार उन्होंने अपने गांव में ही सीखे।

अपने बचपन की स्मृतियां साझा करते हुए पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि उनका घर बहुत साधारण था। बरसात के दिनों में घास-फूस की छत से पानी टपकता था और परिवार के सदस्यों को बारिश रुकने का इंतजार करना पड़ता था। वर्ष 2017 में राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद यह स्मृतियां उनके मन में फिर उभरीं। उस समय उन्होंने कहा था कि आज भी भारत के किसी गांव में कोई छोटा-सा रामनाथ टपकती छत के नीचे खड़ा होकर बेहतर भविष्य का सपना देख रहा होगा। आज उन्हें संतोष है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत केन्द्र और उत्तर प्रदेश सरकार के प्रयासों से असंख्य गरीब परिवारों को पक्के मकान मिले हैं। टपकती छत के नीचे जीवन बिताने वाले लोग ही पक्के घर के महत्व को वास्तविक रूप से समझ सकते हैं।

श्री कोविन्द ने कहा कि ईमानदारी, करुणा, उदारता और न्यायप्रियता जैसे जीवन मूल्य उन्हें अपने पिता से प्राप्त हुए। उनके पिता शिक्षा के महत्व को समझते थे और मानते थे कि शिक्षा असीम सम्भावनाओं के द्वार खोलती है। उनके दादा को विरासत में लगभग 10-12 बीघा कृषि भूमि मिली थी। परिवार में पांच भाइयों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए यह विचार किया गया कि भूमि का बंटवारा होने पर प्रत्येक के हिस्से में बहुत कम जमीन आएगी और अगली पीढ़ी गरीबी में रह सकती है। इसलिए उनके पिता ने उस जमीन को दान कर दिया और परिवार के बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। श्री कोविन्द ने कहा कि शिक्षा की शक्ति ने ही उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान किए।

पूर्व राष्ट्रपति ने कहा कि उत्तर प्रदेश की भूमि और यहां के लोगों का स्नेह, शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद उनके जीवन की पूंजी रहे हैं। परौख गांव के एक साधारण बालक का राष्ट्रपति भवन तक पहुंचना उन करोड़ों लोगों की आकांक्षाओं का सम्मान है, जो यह विश्वास रखते हैं कि साधारण परिस्थितियों में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी मेहनत, शिक्षा और दृढ़ संकल्प के बल पर असाधारण उपलब्धियां हासिल कर सकता है। उत्तर प्रदेश से देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंचने का अवसर मिलना उनके लिए गर्व का विषय है।

श्री कोविन्द ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व और अन्त्योदय की भावना ने उन पर गहरी छाप छोड़ी। भारतीय लोकतन्त्र की खूबसूरती यह है कि एक साधारण शिक्षक का पुत्र देश का प्रधानमंत्री बन सकता है, एक साधारण पृष्ठभूमि से आने वाला व्यक्ति मुख्यमंत्री बन सकता है और समाज के कमजोर वर्ग से

आने वाला व्यक्ति देश के राष्ट्रपति पद तक पहुंच सकता है। यही भारतीय गणतन्त्र की सच्ची विजय गाथा है।

वर्ष 2017 में योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में सरकार बनने के बाद उत्तर प्रदेश में विकास कार्यों, कानून-व्यवस्था और सुशासन को नई ऊर्जा मिली है। मुख्यमंत्री जी ने प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया है। एक्सप्रेस-वे, एयरपोर्ट और मेट्रो सेवाओं जैसी बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं से प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच आवागमन सुगम हुआ है। सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन से अन्त्योदय की भावना के अनुरूप विकास का लाभ ग्रामीण परिवारों और समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इन पहलों से रोजगार, शिक्षा और विकास के अवसर समाज के सभी वर्गों तक पहुंचेंगे तथा प्रदेश के समावेशी विकास को बल मिलेगा।

पूर्व राष्ट्रपति ने उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि यह प्रभु श्रीराम और श्रीकृष्ण, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, संत कबीर, संत रविदास और गोस्वामी तुलसीदास की भूमि है। मां गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम की यह भूमि भारत की महान सांस्कृतिक परम्पराओं का केंद्र है। उन्होंने प्रयागराज महाकुम्भ-2025 का उल्लेख करते हुए कहा कि इस आयोजन ने दुनिया को भारत की आध्यात्मिक चेतना, आस्था और सामाजिक समरसता की विराट शक्ति का परिचय दिया। महाकुम्भ का सबसे बड़ा संदेश यह था कि भारत की प्राचीन परम्पराएं आज भी करोड़ों लोगों को एक सूत्र में बांधने की शक्ति रखती हैं।

श्री कोविन्द ने कहा कि उत्तर प्रदेश के युवाओं को राजनीति, शासन-प्रशासन और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। लोकतंत्र में नागरिकों की भूमिका केवल मतदान तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें शासन व्यवस्था में भी सक्रिय योगदान देना चाहिए। यह धारणा गलत है कि राजनीति में सज्जन व्यक्तियों के लिए स्थान नहीं है। यदि सुशासन स्थापित करना है, तो ईमानदार और योग्य व्यक्तियों को राजनीति में आगे आना होगा। उन्होंने प्राचीन दार्शनिक प्लेटो के विचार का उल्लेख करते हुए कहा कि सार्वजनिक मामलों के प्रति अच्छे लोगों की उदासीनता का परिणाम यह होता है कि उन्हें अपने से कम योग्य लोगों के शासन में रहना पड़ता है। देश के प्रत्येक युवा में शिक्षक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, अधिवक्ता, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति जैसे उच्च पदों तक पहुंचने की क्षमता मौजूद है। भारतीय गणतंत्र, लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्य युवाओं की क्षमताओं को साकार करने के लिए उपयुक्त आधार प्रदान करते हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि उत्तर प्रदेश श्री रामनाथ कोविन्द की जन्मभूमि और कर्मसाधना की भूमि है। उनका प्रदेश में आगमन प्रत्येक उत्तर प्रदेशवासी को अभिभूत करने वाला होता है। आज का अवसर इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उनकी

आत्मकथा 'ट्रायम्फ्स ऑफ द इंडियन रिपब्लिक : माई लाइफ, माई स्ट्रगल्स' के हिन्दी संस्करण का विमोचन उनकी जन्मभूमि वाले प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इस पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण का विमोचन पहले ही किया जा चुका है। मुख्यमंत्री जी ने इस प्रेरक कृति के प्रकाशन और विमोचन के अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार तथा प्रदेश की 25 करोड़ जनता की ओर से श्री रामनाथ कोविन्द को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि श्री रामनाथ कोविन्द का जीवन इस बात का उदाहरण है कि व्यक्ति अभावों को अपनी कमजोरी बनाने के बजाय उन्हें संघर्ष की शक्ति बना सकता है। उन्होंने अभावों में जीवन व्यतीत किया, लेकिन उन्हें अपने जीवन में आगे बढ़ने की राह में बाधा नहीं बनने दिया। उन्होंने परिश्रम, पुरुषार्थ और संघर्ष का मार्ग चुना। कानपुर देहात जिले के परौख गांव के एक साधारण परिवार से प्रारम्भ हुई उनकी जीवन यात्रा भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंची। यह यात्रा बताती है कि व्यक्ति में संघर्ष करने का जज्बा हो, विषम परिस्थितियों से जूझने की प्रवृत्ति हो और लक्ष्य के प्रति दृढ़ संकल्प हो, तो वह असाधारण उपलब्धियां प्राप्त कर सकता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि श्री रामनाथ कोविन्द ने अपने सार्वजनिक जीवन में जिस सहजता, सरलता और संवैधानिक मर्यादा के साथ दायित्वों का निर्वहन किया, वह अनुकरणीय है। राज्यसभा के सदस्य, बिहार के राज्यपाल और भारत के राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन देश की भावनाओं के अनुरूप किया। श्री कोविन्द ने प्रत्येक दायित्व को सहजता और सरलता के साथ निभाया तथा अपने व्यवहार से लोगों के मन में सम्मान और श्रद्धा का भाव उत्पन्न किया। उनका जीवन भारतीय गणतंत्र की उस शक्ति का परिचायक है, जिसमें साधारण परिस्थितियों में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी शिक्षा, मेहनत और दृढ़ संकल्प के बल पर सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंच सकता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि राष्ट्रपति पद पर पहुंचने के बाद भी श्री रामनाथ कोविन्द का अपनी जन्मभूमि, गांव और पुराने साथियों के प्रति अनुराग बना रहा। वे अपने पुराने परिचितों से उसी आत्मीयता से मिलते हैं और किसी को स्वयं से दूर नहीं करते। जन्मभूमि के प्रति ऐसा लगाव भारतीय संस्कृति के मूल भाव को अभिव्यक्त करता है। भगवान श्रीराम ने भी सोने की लंका के आकर्षण को अस्वीकार करते हुए जननी और जन्मभूमि को सर्वोपरि माना था। व्यक्ति चाहे कितने ही ऊंचे पद पर पहुंच जाए, अपनी जड़ों, संस्कारों और जन्मभूमि के प्रति सम्मान का भाव सदैव बनाए रखना चाहिए।

श्री रामनाथ कोविन्द के गांव परौख के विकास का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री जी ने कहा कि गांव में आंगनबाड़ी केन्द्र, बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालय और शिक्षा की बेहतर सुविधाओं के विकास की दिशा में प्रयास किए गए हैं। वहां विद्यालय भवन को विकसित कर राज्य सरकार को समर्पित किया गया, जिसे सरकार ने एक अच्छे

आवासीय विद्यालय के रूप में विकसित करने का कार्य किया। किसी महान व्यक्तित्व का सम्मान केवल औपचारिकता नहीं होना चाहिए, बल्कि उनके आदर्शों और मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए।

मुख्यमंत्री जी ने शिक्षा और पुस्तकों के महत्व पर विशेष बल देते हुए कहा कि अच्छी पुस्तकें किसी भी व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण मार्गदर्शक बन सकती हैं। आज के समय में जब लोग प्रतिदिन पांच से सात घण्टे स्मार्टफोन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यतीत कर रहे हैं, ऐसे में यदि वे एक-दो घंटे भी पुस्तकों के अध्ययन के लिए निकालें, तो इससे उन्हें अधिक लाभ होगा। सोशल मीडिया पर रील बनाकर लाइक्स प्राप्त करने के बजाय अपनी वास्तविक जिंदगी को बेहतर बनाने पर ध्यान देना अधिक उपयोगी है। युवाओं को आगे बढ़ने के लिए महापुरुषों की जीवनियां और आत्मकथाएं पढ़नी चाहिए, क्योंकि इनके माध्यम से संघर्ष, अनुशासन, परिश्रम और राष्ट्रसेवा के मूल्यों को समझने का अवसर मिलता है।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश में ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालयों की स्थापना की जा रही है। प्रदेश की 57,600 ग्राम पंचायतों में ग्राम सचिवालय निर्मित हो चुके हैं और इनमें एक कक्ष पुस्तकालय के लिए निर्धारित किया गया है। इन पुस्तकालयों में गांव के बच्चों को अध्ययन की सुविधा मिल रही है तथा डिजिटल पुस्तकालयों के विकास को भी आगे बढ़ाया जा रहा है। विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों और बेसिक शिक्षा परिषद के विद्यालयों में भी पुस्तकालयों के निर्माण पर जोर दिया जा रहा है, ताकि अच्छी पुस्तकों तक विद्यार्थियों की पहुंच सुनिश्चित हो सके।

मुख्यमंत्री जी ने कहा कि नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर पुस्तक मेलों का आयोजन किया जा रहा है। लखनऊ में आयोजित पुस्तक मेले के बाद गोरखपुर में भी पुस्तकें खरीदने के लिए बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। हाल ही में लखनऊ विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित पुस्तक मेले में भी युवाओं, विद्यार्थियों और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की भागीदारी देखने को मिली। समाज में पुस्तकें पढ़ने की रुचि को प्रोत्साहित करने के लिए उचित मंच और अवसर उपलब्ध कराना आवश्यक है। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि उत्तर प्रदेश सरकार भी अच्छी पुस्तकों को विद्यार्थियों तक पहुंचाने की दिशा में प्रयास करेगी।

उप मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि श्री राम नाथ कोविन्द के व्यक्तित्व में पद की गरिमा के साथ विनम्रता और सादगी का अद्भुत समन्वय है। सार्वजनिक जीवन में शुचिता बनाए रखना और बड़े से बड़े पर पहुंचने के बाद अहंकार से दूर रहना महत्वपूर्ण है। श्री राम नाथ कोविन्द का जीवन इस दृष्टि से सभी के लिए प्रेरणादायक है।

उप मुख्यमंत्री श्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि सादगी, पारदर्शिता और सहजता श्री राम नाथ कोविन्द के व्यक्तित्व की विशेषताएं हैं। कानपुर के छोटे से गांव से निकलकर सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंचना भारतीय गणतन्त्र की सुन्दरता को दर्शाता है।

उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष श्री सतीश महाना ने कहा कि श्री राम नाथ कोविन्द स्नेह, विनम्रता और सादगी के प्रतीक हैं। ऊंचे पद पहुंचने के बाद भी अपनी जड़ों से जुड़े रहना श्री कोविन्द के व्यक्तित्व की विशेषता है।

वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री श्री सुरेश कुमार खन्ना, समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री असीम अरुण ने भी सम्बोधित किया।

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द की धर्मपत्नी श्रीमती सविता कोविन्द, रूपा पब्लिकेशंस के प्रबन्ध निदेशक श्री कपीश मेहरा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

-----

*PN CM-Former President Autobiography Release-14 October, 2026*